International Journal of Education and Science Research Review

Volume-1, Issue-1 February-2014 ISSN 2348-6457

बी.एस. टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन
(A Study of Attitude of BSTC Students towards Teaching Practice)

डॉ मनोज झाझडिया
Principal,Kanoria B.Ed. College
Mukundgarh

डॉ राजेन्द्र प्रसाद
H.O.D,Faculty of Education
J.J.T. University Chudela
Jhunjhunu, Raj

प्रस्तावना

शिक्षण का सम्प्रत्यय उतना ही पुराना है जितना कि मानव। साधारण शब्दों में स्पश्ट करें तो शिक्षण किसी को कुछ सिखाने में सहायता प्रदान करता है। शिक्षण सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यावहारिक, व्यवसायिक एवं जटिल प्रक्रिया है। अपने बच्चों को आदतन नया शब्द सीखाना शिक्षण है। किसी छात्र को अच्छा आचरण करना सिखाना शिक्षण है। जब हम किसी को कुछ सिखाने में सहायता करते हैं, जिसे वह अपने आप नहीं कर सकता उसे और तेजी से प्रभावकारी ढंग से सिखाने में सहायता करते हैं तब हम शिक्षण कर रहे होते हैं।

कोई व्यक्ति जब किसी को कुछ सिखाता है तो वह उसे कुछ अनुचित भी समझ सकते हैं। बच्चे को सत्य के बारे में बता रहे व्यक्ति के समझने के ढंग से वह उचित अथवा अनुचित हो सकता है। सत्य के फलन में विशयों के अनुसरण में, देशहित में अपने प्राणों की बाजी लगा देना भी शिक्षण की ही देन है। सीखा हुआ व्यवहार वांछित है या अवांछित एवं अनुचित यह हमारे दृश्टिकोण और जीवन के मूल्यों पर निर्भर करता है।

कक्षा में जब एक शिक्षक सुनिश्चित उधेश्यों को प्राप्त करने के लिये पढ़ाता है तब शिक्षण साभिप्राय हे। किन्तु इस प्रकार के अनौपचारिक शिक्षण के अतिरिक्त औपचारिक भी हो सकता है। हम एक शिक्षक के नाते छात्र को भगाना, लड़ाना, झगड़ना, कक्षा कार्य न करना, नकल करके कार्य करना आदि कभी नहीं सिखाते किन्तु जो कुछ नहीं सिखते उन्हें भी वे सीख लेते हैं। शिक्षा व्यवहार में परिवर्तन लाने की प्रक्रिया है - शिक्षण ।

प्राचीन काल में अध्यापक बनने के लिये किसी प्रशिक्षण की आव-यकता नहीं थी न ही इस प्रशिक्षण हेतु दीक्षा विद्यालय या प्रशिक्षण महाविद्यालय ही थे। गुरू अपने आश्रम में ही विद्यार्थियों को शिक्षा देते थे। यह वंश परम्परा ही बनती चली गई और न ही इसके लिये प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। अब समय बदल गया है। जीवन के मूल्य, आवश्यकताएं, जीवन-दर्शन आदि तेजी से बदल रहे हैं। ऐसे समय में शिक्षा नीति एवं शिक्षा प्रक्रिया में बदलाव आना स्वाभाविक ही है। शिक्षा के स्वरूप एवं शिक्षा का व्यावसायिकरण करने हेतु समय-2 पर आयोग व समितियां बनाई गई।

अध्यापक समाज के कर्णधार हैं। अतः ऐसे शिक्षकों की आव-यकता है जो अच्छे कर्णधारों का निर्माण कर सके। इसके लिये आवश्यक है कि भावी अध्यापकों को उचित प्रशिक्षण दिया जाये। उनको सैद्धान्तिक कार्य के साथ व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाना चाहिए। समय के बदलते प्रवाह के साथ-साथ शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, शैक्षिक संरचना आदि में वांछित परिवर्तन नहीं किये गये हैं। यही कारण है कि राश्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के बनाने वालों ने समाज में वांछित परिवर्तन लाने हेतु शिक्षक समुदाय पर ही पूर्ण भरोसा करते हुए नई शिक्षा नीति में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं उसकी गुणवत्ता में मौलिक सुधार की व्यवस्था की है।

वर्तमान में शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में निम्न कमियां दृश्टिगोचर होती हैं-

- शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम अभी पुराना ही है जो वर्तमान में अध्यापकों में आव-यक दक्षताओं का विकास करने में असमर्थ है।
- व्यावहारिक शिक्षण केवल औपचारिकता मात्र ही होता है। वास्तविक अध्यापन कौशलों का विकास अध्यापकों में नहीं किया जाता।
- शिक्षण प्रशिक्षण से सम्बन्धित नवाचार जैसे- सूक्ष्म शिक्षण, अन्तक्रिया विश्लेशण, अभिक्रमित शिक्षण, अनुकरणीय शिक्षण, दल शिक्षण आदि का ज्ञान व्यावहारिक रूप में अध्यापकों को नहीं दिया जा रहा है।
- प्रशिक्षण के बाद सेवारत अध्यापक अपने प्रशिक्षण के ज्ञान को व्यवहार में नहीं लाते हैं।
- बहुत से ऐसे व्यक्ति भी चुन लिये जाते हैं जिनकी अध्यापन के प्रति न तो अन्तर्मन की भावना होती है और न अभिवृति।
- अध्यापक शिक्षा में मूलभूत परिवर्तन करके देशव्यापी व्यावहारिक कार्यक्रम बनाना।

इससे स्पश्ट होता है कि शिक्षण प्रशिक्षण के समय व्यावहारिकता का अभाव है। इससे वांछित कौशलों का विकास नहीं हो पाता है। शिक्षण प्रशिक्षण की अवधि दो वर्श की होती है। जिसमें व्यावहारिक प्रशिक्षण मात्र कुछ दिन का होता है। जो मात्र औपचारिकता होती है। अपितु होना यह चाहिये कि सैद्धान्तिक शिक्षण जितना होता है उतना ही व्यावहारिक शिक्षण पर ध्यान दिया जाये, क्योंकि व्यावहारिक ज्ञान ही भावी शिक्षा के शिक्षण कौशल को विकसित करता है। इसलिये किसी भी अध्यापक का स्तर कक्षा-कक्ष शिक्षण से ही आंका जाता है।

शिक्षण अभ्यास' शिक्षक प्रशिक्षण में एक बहुत ही उपेक्षित क्षेत्र है। शिक्षण अभ्यास के प्रति सही वैज्ञानिक दृश्टिकोण आज के युग की मुख्य आवश्यकता है। अनुसंधानकर्ता ने अपने अनुभव के आधार पर यह निर्णय लिया है कि शिक्षा के क्षेत्र में काफी कार्य हुआ है। परन्तु अभ्यास शिक्षण के क्षेत्र में कार्य कम हुआ है। शिक्षण का इतना महत्व होते हुए भी शोध के क्षेत्र में शिक्षण प्रशिक्षण के महत्वपूर्ण भाग 'अभ्यास शिक्षण ' को नजर अन्दाज किया गया है।

शिक्षण कार्य कोई व्यापार अथवा धंधा नहीं है बल्कि यह तो एक सेवा है जो सच्चे दिल से की जा सकती है। इस शोध से छात्रों को अपने शिक्षण अभ्यास के प्रति अभिवृत्तियों के बारे में जानकारी मिल सकेगी।

समस्या कथन

"**बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन**"

अध्ययन के उधे-य

अध्यय के मुख्य उधेश्य प्रशिक्षणार्थियों का शिक्षण अभ्यास तथा अध्यापन व्यवसाय के प्रति दृश्टिकोण में कितना तालमेल है, का अध्ययन करना है फिर भी प्रस्तुत प्रायोजन में अनुसंधानकर्त्ती ने निम्नांकित उधेश्यों को दृश्टिगत रखते हुए कार्य किया है :-

1. बीकानेर एवं सीकर के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शिक्षण अभ्यास के प्रति बीकानेर एवं सीकर के प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. बीकानेर क्षेत्र के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. सीकर के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. बीकानेर एवं सीकर के पुरूश छात्राध्यापकों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
6. बीकानेर एवं सीकर की महिला छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

परिकल्पना शब्द का अर्थ एक अकथन से होता है जो समस्या के समाधान की अवधारणा होती है। सरल शब्दों में लें तो परिकल्पना, शोध समस्या का सम्भावित समाधान होता है। वैज्ञानिक :ोध को सभी क्रियाओं का नियोजन परिकल्पनाओं के पुश्टि के लिये किया जाता है।
इस शोधकार्य के अन्तर्गत शोधार्थी ने निम्न परिकल्पनाएं निर्धारित की हैं:-

1. बीकानेर एवं सीकर के छात्राध्यापकों की, बीकानेर एवं सीकर की छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. बीकानेर व सीकर के प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. बीकानेर के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सीकर के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
5. बीकानेर व सीकर के पुरूश अध्यापकों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
6. बीकानेर व सीकर की महिला छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्श

न्यादर्श के अन्तर्गत बीकानेर व सीकर के उन प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है जो बी.एस.टी.सी. अध्ययन कर रहे हैं। इसमें सम्मिलित दोनों शिक्षण विद्यालय सह-शिक्षा के हैं। इन विद्यालयों से 200 छात्राध्यापक व छात्राध्यापिकाओं को लिया गया हैं, जिनमें बीकानेर व सीकर से 100-100 प्रशिक्षणार्थियों प्रत्येक जिले से 50 छात्राध्यापक व 50 छात्राध्यापिकाओं को लिया गया।

अध्ययन की परिसीमाएं

जब भी हम कोई शोध करते हैं तो उसका समय, साधन और शक्ति की दृश्टि से अध्ययन की सीमा निर्धारित करना आव-यक है, इसके फलस्वरूप ही शोधार्थी ने इस समस्या का सीमांकन किया है। शोध को सुनि-चित विस्तार देने के लिये एवं आव-यक प्रसंगों से इसकी निम्नांकित सीमाएं रखी गई हैं:-

1. यह शोध कार्य राजस्थान प्रान्त के बीकानेर जिले व सीकर जिले तक सीमित है।

2. यह शोध कार्य बीकानेर व सीकर जिले के छात्राध्यापकों और छात्राध्यापिकाओं तक सीमित है।
3. यह शोध कार्य बीकानेर व सीकर जिले के शहरी व ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों तक सीमित है।
4. सीकर एवं बीकानेर डाइट के शिक्षण तक सीमित है।

अध्ययन की विधि

वर्तमान अध्ययन में सर्वेक्षण विधि को प्रयोग में लिया गया है। सर्वेक्षण विधि का उधेश्य किसी इकाई को वर्तमान व्यवस्था एवं तथ्यों का अध्ययन करना तथा भावी शोध हेतु सुझाव देना है।

उपकरण

प्रदत्त संकलन के लिये स्वःनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया है। इसमें 21 कथनों को रखा गया। इस मापनी की विश्वसनीयता 0.78 प्राप्त हुई तथा यह अभ्यास शिक्षण के मापन हेतु वैद्य पाई गई। उपकरण का विकास अध्ययन के उधेश्य को ध्यान में रखते हुए विशय विशेशज्ञों के सहयोग से किया गया एवं विशेशज्ञों के निर्देशानुसार निर्मित किया गया।

सांख्यिकीय तकनीक

- मध्यमान
- मानक विचलन
- सह-सम्बन्ध
- टी-मूल्य

मुख्य निश्कर्श

इस तुलनात्मक अध्ययन के निश्कर्श इस प्रकार रहे :-

1. सीकर के छात्राध्यापकों की सीकर की छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः यह परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।
2. सीकर के प्रशिक्षणार्थियों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
3. सीकर क्षेत्र के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के मध्य अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
4. बीकानेर क्षेत्र के छात्राध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं के मध्य अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
5. सीकर व बीकानेर के पुरूश छात्राध्यापकों की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः परिकल्पना स्वीकार की जाती है।
6. सीकर व बीकानेर के महिला छात्राध्यापिकाओं की अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः यह परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

भावी शोध के लिये सुझाव

प्रस्तुत शोध अनुसंधानकर्ता ने बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों पर किया है। इस अध्ययन में समयाभाव के कारण सीकर व बीकानेर जिले के शिक्षण -प्रशिक्षण महाविद्यलयों पर किया गया है। अतः इसके पिरणाम पूरे राजस्थान में लागू नहीं हो सकते किन्तु इस क्षेत्र में अनुसंधान के लिये प्रोत्साहन अव-य मिलेगा। अतः इस क्षेत्र के भावी अनुसंधान के लिये कुछ निम्नलिखित सुझाव हैः-

1. प्रस्तुत अध्ययन सीमित बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों पर किया गया है। अतः न्यादर्श संख्या को बढ़ाया जाना चाहिये।
2. प्रस्तुत अध्ययन में बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों का अध्ययन किया गया है। इसमें इसके साथ-साथ प्रशिक्षणार्थियों की अभिक्षमता का भी अध्ययन किया जा सकता है।
3. इसमें राजस्थान के अन्य जिलों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
4. बी.एस.टी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का अभ्यास शिक्षण के प्रति अभिवृत्तियों का पृथक-पृथक अध्ययन (छात्राध्यापकों/छात्राध्यापिकाओं पर) पूरे राजस्थान पर किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. कपिल, एच. के. (1987) अनुसन्धान विधियां, आगरा, हर प्रसाद भार्गव.
2. डोडियाल, सच्चिदानन्द एण्ड फाठक, अरविन्द (1972) शैक्षिक अनुसन्धान का विधि शास्त्र, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
3. तिवारी, गोविन्द (1995) शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधार, आगरा,, विनोद पुस्तक मंदिर.
4. मुनटो, डब्ल्यू.एस. (1952) एनसाइकलोपीडिया ऑफ एजूकेशन, न्यूयॉर्क, दी मैकिसन.
5. शर्मा, प्रभा (1978) नये अध्यापकों की समस्याओं का एक अध्ययन, जयपुर, राजस्थान विश्वविद्यालय.
6. सुखपाल, कैलाशदेवी (1972) अध्यापिकाओं द्वारा शिक्षा व्यवसाय के चयन के कारण, उदयपुर विश्वविद्यालय.
7. भार्गव महेश व अन्य (1985) मनोविज्ञान एवं शैक्षिक सांख्यिकी के मूल आधार, आगरा, हर प्रसाद भार्गव प्रकाशक.
8. सुखिया, एस. पी. व अन्य (1985) शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्व, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर.
9. गौड राजेन्द्र प्रसाद (1985) सामाजिक मूल्यों के विकास हेतु माध्यमों का अध्ययन, अजमेर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय.
10. पाण्डेय, के. पी. (2005) शैक्षिक अनुसन्धान, वाराणसी, विश्वविद्यालय प्रकाशन.
11. शर्मा, आर. ए. (2002) शिक्षा अनुसन्धान, मेरठ, लाल बुक डिपो.
12. राय, पारसनाथ (1999) अनुसन्धान परिचय, आगरा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
13. अस्थाना, विपिन (1988) शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद प्रकाशन.
14. रायजादा, बी.एस. (1992) शैक्षिक अनुसन्धान के आवश्यक तत्व, जयपुर, राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी.
15. बेस्ट, डब्ल्यू. जॉन (1982) रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू दिल्ली, प्रिंटिग हॉल ऑफ इण्डिया (प्रा.) लिमिटेड
16. पुरोहित, जे. एन. व अन्य (1981) भावी शिक्षकों के लिये आधारभूत कार्यक्रम, जयपुर, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.